भोरमदेव मंदिर, कबीरधाम (कवर्धा)

इतिहास

पुनरावृत्ति

पिछली कक्षा में आपने पढ़ा...

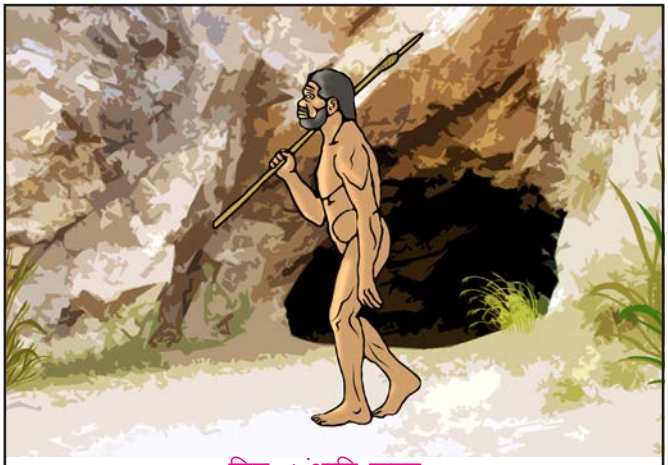

चित्र–1 आदि मानव

आदि मानव पत्थरों एवं लकड़ी के औजारों से शिकार करते थे। वे कंदमूल, फल और माँस खाकर अपना जीवन बिताते थे।

कुछ समय बाद उन्होंने खेती करना शुरू किया और स्थायी रूप से एक जगह बसने लगे। इसके बाद सिंधुघाटी में शहर बसे जहाँ की सड़कें चौड़ी और सीधी थीं। सिंधुघाटी के शहरों में अच्छे कारीगर भी रहते थे, जो ताँबा, एवं काँसा जैसे धातुओं से औजार, बर्तन और मूर्तियाँ बनाते थे।

सिंधुघाटी के शहरों के नष्ट हो जाने के बाद सिंधु, सतलज, झेलम, व्यास और सरस्वती आदि नदियों के किनारे आर्य संस्कृति विकसित हुई। इस क्षेत्र को सप्तसिन्धु प्रदेश कहते थे। वे संस्कृत भाषा बोलते थे। आर्यों का मुख्य काम पशुपालन था। ये समय–समय पर अपने देवी देवताओं के लिए यज्ञ भी करते थे। उन्होंने ऋग्वेद नामक ग्रंथ की रचना की।

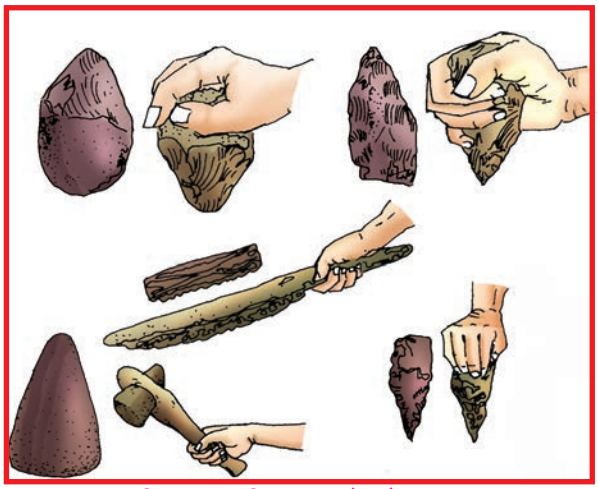

चित्र–2 आदि मानव के औजार

बाद में गंगा यमुना नदी के किनारे आर्य संस्कृति का विस्तार हुआ। अब वे मुख्य रूप से खेती करने लगे और गाँवों में रहने लगे। इस प्रकार जनपद बने। अब जन के मुखिया राजा कहलाने लगे तथा उसके रिश्तेदार और सहयोगी राजन्य कहलाते थे। वे खेती करने वाले गृहपतियों से भेंट लेने लगे। वे बड़े–बड़े यज्ञ करते थे। आज से लगभग 2600 वर्ष के पहले 16 महाजनपद बने। इनमें कोशल, वत्स और मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद थे। महाजनपदों में कुछ राजतंत्र और कुछ गणतंत्र शासन वाले थे। महाजनपद काल में धातु के सिक्कों का प्रचलन हुआ और व्यापार का विकास भी हुआ।

गाँव धीरे–धीरे नगरों का रूप लेने लगे। इनमें उज्जैन, पाटलीपुत्र, वैशाली महानगर कहलाते थे। इन्हीं दिनों स्वामी महावीर एवं भगवान बुद्ध हुए जिन्होंने जैन धर्म और बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ दीं।

चित्र–3 सिंधुघाटी सभ्यता की मुहरें

कालांतर में यूनान के राजा सिकंदर ने उत्तर पश्चिम क्षेत्र पर आक्रमण किया।

इसके बाद मौर्य साम्राज्य बना। इसी वंश में सम्राट अशोक हुए जिन्होंने युद्ध के बदले धर्म एवं सद्व्यवहार के रास्ते पर चलकर लोगों के दिलों को जीतने की कोशिश की। उन्होंने अपनी प्रजा तक अपने विचार पहुँचाने के लिए पत्थर के खम्भों एवं चट्टानों पर संदेश खुदवाए।

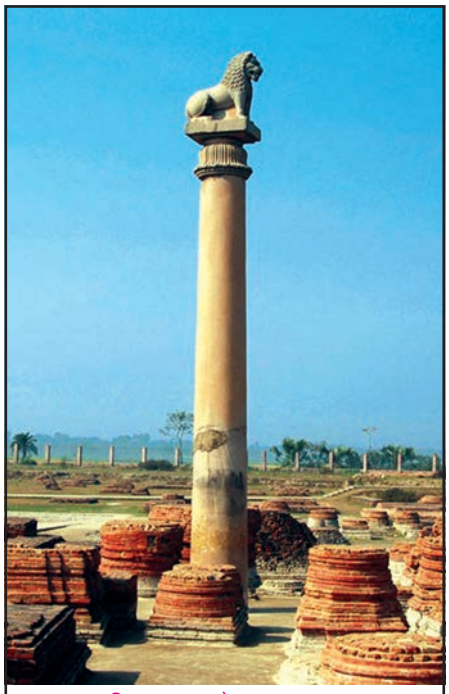

चित्र–4 अशोक का स्तंभ, सारनाथ

सम्राट अशोक के कई सौ साल के बाद मगध राज्य में गुप्त वंश का शासन स्थापित हुआ। इस वंश के एक प्रमुख शासक समुद्रगुप्त थे। उन्होंने अपने राज्य विस्तार के लिए दो प्रकार की नीतियाँ अपनाई। आर्यावर्त के राज्यों को हराकर अपने राज्य में मिला लिया तथा दक्षिणापथ के राजाओं को हराकर उनका राज्य उन्हें लौटा दिया। गुप्त वंश की समाप्ति के पश्चात् कई छोटे–छोटे राज्य बने, उनमें कन्नौज के राजा हर्षवर्धन प्रसिद्ध थे।

उन दिनों छत्तीसगढ़ क्षेत्र को दक्षिण कोसल कहा जाता था जिसकी राजधानी श्रीपुर (सिरपुर) थी। वहाँ के प्रसिद्ध राजा महाशिव गुप्त बालार्जुन थे। पुरातत्वविद् एवं इतिहासकारों ने इस युग को छत्तीसगढ़ का स्वर्ण युग कहा है। सिरपुर में ईंट का बना प्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर इसी समय का है। सर्वधर्म समभाव तद्युगीन विशेषता थी।

चित्र–5 सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर

1 छोटे–छोटे राज्यों का विकास

(सन् 650 ई. से 1200 ई.)

KXEIAF

सन् 647 में राजा हर्षवर्धन की मृत्यु हो गई। उसके बाद आने वाले 600 वर्षों तक भारत में कोई भी बड़ा राज्य नहीं बना और पूरे भारत में कई छोटे–छोटे राज्य बन गए। ऐसा क्यों हुआ? ये छोटे–छोटे राज्य कहाँ से आए? इस समय के प्रमुख राजा कौन–कौन थे? उनकी शासन व्यवस्था कैसी थी? ये सभी बातें हम इस पाठ में पढ़ेंगे।

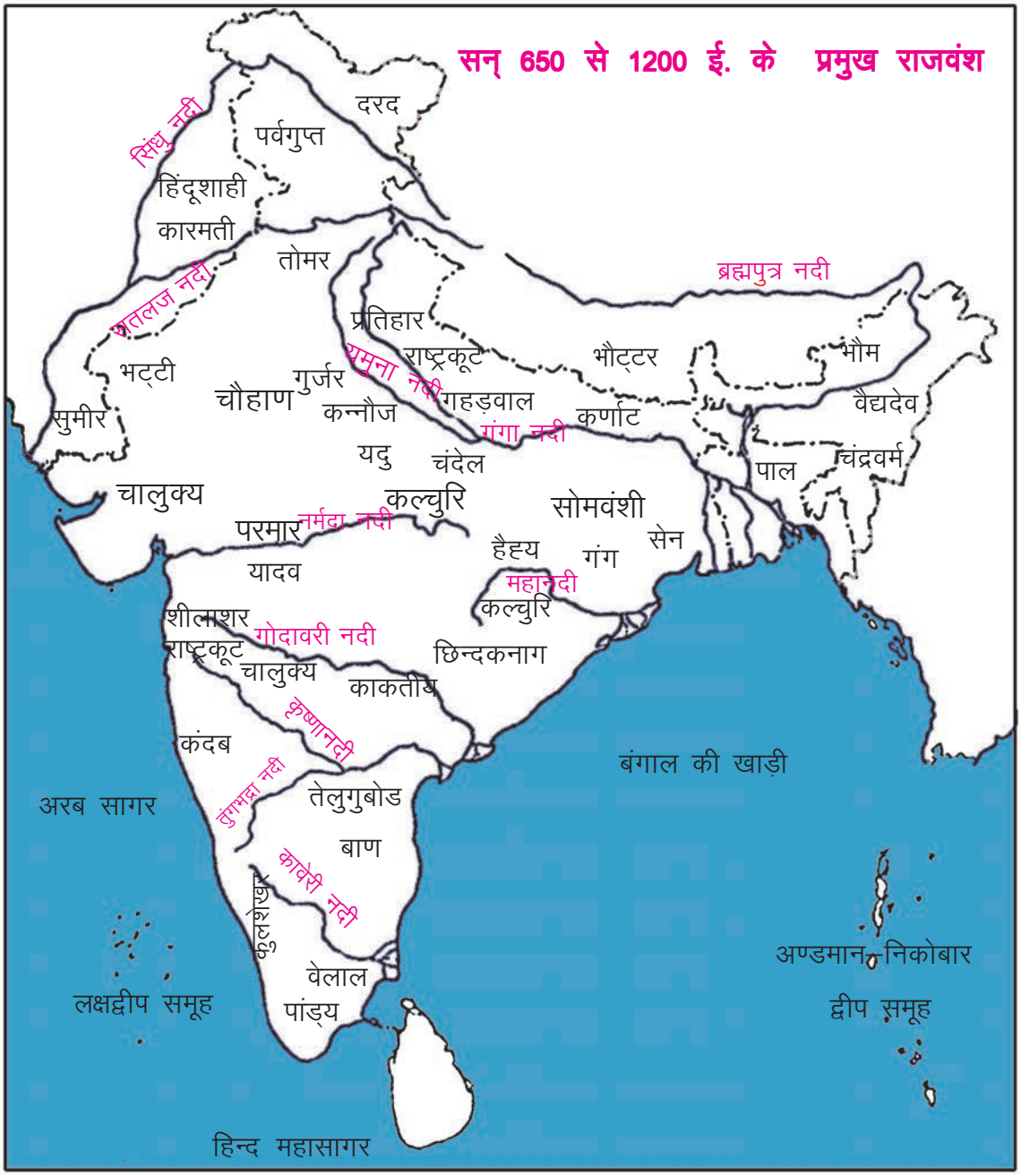

मानचित्र–1.1

मानचित्र 1.1 को ध्यान से देखें। इस काल में कितने सारे छोटे–छोटे राजवंश बन गए थे इनमें अपने छत्तीसगढ़ क्षेत्र के राजवंशों को पहचानकर उनके नाम बताइए।

नये राजा और राजवंश कैसे बने?

सन् 650 के आसपास के प्राप्त शिलालेखों और ताम्रपत्रों से पता चलता है कि इस समय भारत में कई शक्तिशाली राजा हुए, जिन्होंने अपने आस–पास के इलाकों को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया था। लेकिन बाद में इन राजाओं के उत्तराधिकारी उतने योग्य नहीं हुए। इस कारण उनके राज्यों के अधिकारी (प्रांत प्रमुख, सेनाप्रमुख आदि) अपने इलाकों में ज्यादा आजादी से शासन करते थे और धीरे–धीरे उस राजा की अधीनता मानने से भी इन्कार करने लगे। उदाहरण के लिए पश्चिम भारत के एक राज्य में राष्ट्रकूट वंश का शासन था, जो पहले चालुक्य राजाओं के कर्मचारी थे। परन्तु 8वीं सदी में उन्होंने अपनी ताकत बढ़ाकर अपने आपको स्वतंत्र शासक के रूप में स्थापित कर लिया।

कभी–कभी ऐसा भी हुआ कि किसी शक्तिशाली योद्धा ने अपने साथियों के साथ कमजोर कबीलों और बस्तियों पर आक्रमण कर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। आगे चलकर उसने दूसरे इलाकों से ब्राह्मणों, व्यापारियों और किसानों को बुलाकर वहाँ बसाया और खुद को वहाँ का राजा घोषित कर लिया। उदाहरण के लिये राजस्थान में जोधपुर के पास घटियाला से मिले एक शिलालेख से पता चलता है कि इस क्षेत्र में प्रतिहार वंश के लोगों का शासन इसी तरह स्थापित हुआ था। जबलपुर के निकट त्रिपुरी राज्य के कल्चुरियों ने छत्तीसगढ़ में अपना शासन स्थापित किया।

राजा और राज्य बनने के कुछ और भी तरीके थे, जैसे कुछ परिवारों ने जमीन के बड़े–बड़े टुकड़ों पर अधिकार कर लिया। उन जमीनों से अच्छी फसलें प्राप्त करने के लिए सिंचाई के नये साधन जैसे कुएँ, तालाब, बावड़ी आदि बनवाए। इससे फसलें अच्छी होने लगीं और वे संपन्न होने लगे। धीरे–धीरे उन इलाकों के लोगों पर उनका दबदबा बढ़ता गया और लोग उनकी बातें मानने लगे। इन परिवारों ने अपने को श्रेष्ठ और ऊँचा सिद्ध करने के लिए अपने वंश का संबंध देवताओं व ऋषियों से जोड़ा। उदाहरण के लिए बंगाल में पालवंश एवं मध्यभारत में कल्चुरियों का उत्थान कुछ इसी तरह हुआ था।

अगर आज इस प्रकार कोई राजा बनना चाहे तो क्या लोग उसे राजा मान लेंगे?

ब्राह्मणों और भाटों की भूमिका

इन ताकतवर परिवारों को राजवंश के रूप में स्थापित करने और राज्य की व्यवस्था बनाने में ब्राह्मणों ने बड़ी सहायता की। उन दिनों धर्म, ज्ञान और राजकाज चलाने के ज्ञाता के रुप में ब्राह्मणों की बड़ी प्रतिष्ठा थी। इसलिए उत्तर और दक्षिण दोनों ही क्षेत्रों के राजाओं ने गंगा–यमुना तट पर बसे ब्राह्मणों को अपने राज्य में बसाया।

राजा ब्राह्मणों को कभी–कभी पूरे गाँव–के–गाँव या फिर गाँवों से प्राप्त होनेवाला संपूर्ण लगान दान में दे देते थे। इन आदेशों को प्रमाण के रूप में रखने के लिए इन्हें ताम्रपत्र पर

खुदवाया जाता था। ब्राह्मण राजाओं की वंशावली बनाते थे, जिनमें उन्हें चंद्र, सूर्य या किसी महान ऋषि का वंशज बताया जाता। साथ ही समाज में राजा की श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए ब्राह्मण उनसे राजसूय, अश्वमेध जैसे यज्ञ भी करवाते थे। छत्तीसगढ़ में कल्चुरि शासक रत्न देव तृतीय का ऐसा एक दान देनेवाला ताम्रपत्र हमें प्राप्त हुआ है।

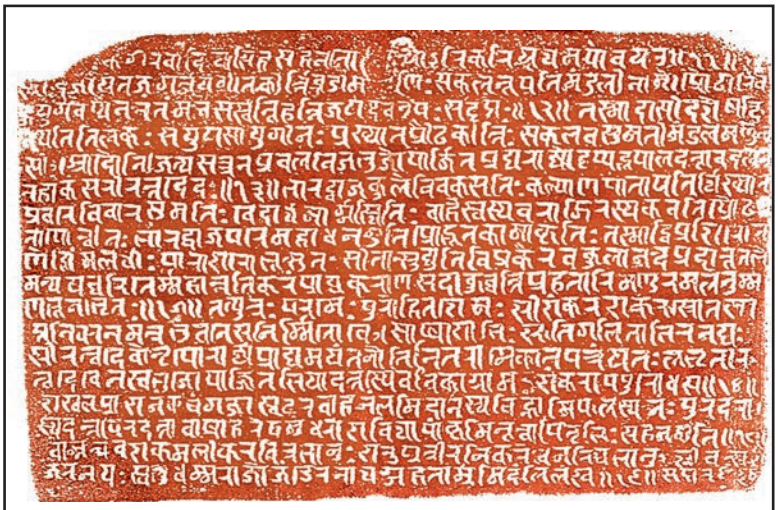

चित्र–1.1 रतनपुर के राजा रत्नदेव तृतीय का दानपत्र, (12वीं सदी), खरौद शिलालेख जिसमें दान का उल्लेख है।

भाटों ने भी राजवंशों को प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस युग में समूचे उत्तर भारत में भाट परम्परा दिखाई देती है। भाट दरबारी कवि होते थे जो स्थानीय भाषा में राजा व उसके पूर्वजों की प्रशंसा में गीत गाकर राजा एवं उसके वंश के प्रति लोगों के मन में श्रद्धा और गर्व के भाव जगाते थे। छत्तीसगढ़ में चारण कवि की परंपरा थी।

खैरागढ़ के राजा लक्ष्मीनिधि राय के दरबार में कवि दलराम राव थे। इन्होंने अपनी कविताओं में राजा की प्रशंसा के साथ ही पहली बार 'छत्तीसगढ़' नाम का प्रयोग किया था।

अधिपति राजा और सामंत राजा

KXNEC3

राजाओं की संख्या बढ़ने से भूमि और अधिकार क्षेत्र के विस्तार को लेकर अनेक युद्ध हुए। इन दिनों जो राजा हार जाते उन्हें आमतौर पर अपने राज्य वापस मिल जाते थे पर बदले में उन्हें विजयी राजा की कुछ शर्तें माननी पड़ती थीं। पराजित राजा को यह स्वीकार करना पड़ता था, कि विजयी राजा उसका स्वामी है। विजयी राजा अधिपति कहलाता था किन्तु पराजित राजा उसका सामन्त कहलाता था। यह दिखाने के लिए कि वह किसी राजा का अधीन है, पराजित राजा को अपने नाम के आगे यह बात लिखनी पड़ती थी, जैसे– ''परमभट्टारक परमेश्वर महाराजाधिराज श्री भोज देव के चरणों में रहनेवाले महासामंत श्री क्षितिपाल''। इसके अतिरिक्त सामन्त अपने अधिपति के प्रति अपनी कृतज्ञता दिखाने के लिए उसके पास समय–समय पर मूल्यवान भेंट भी भेजते थे। साथ ही जब भी अधिपति राजा कोई युद्ध लड़ रहा होता तो सामंतों को उसकी सहायता के लिए अपनी सेना लेकर जाना पड़ता था।

पराजित राजाओं को उनके राज्य वापस लौटा देने से विजयी राजा को क्या लाभ होता था?

प्रमुख राजवंश

सन् 800 ई. से लगभग 1000 ई. तक उत्तर, पूर्वी और मध्यभारत दक्षिण में तीन बड़े प्रभावशाली राजवंश बने। उत्तर भारत में प्रतिहार वंश, पूर्वी भारत में पाल वंश और दक्षिण में राष्ट्रकूट वंश।

इन तीन वंशों के राजा कन्नौज पर अधिकार करने और उत्तरी भारत पर अपना अधिकार स्थापित करने के लिए आपस में लगभग 200 वर्षों तक लड़ते रहे और इसी कारण तीनों राज्यों की शक्ति भी नष्ट हो गई।

1. मानचित्र–1.1 में देखें पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट राजवंश भारत के किन क्षेत्रों में थे ?
2. मानचित्र में कन्नौज कहाँ पर स्थित है ? पहचानें।
3. ये राजवंश कन्नौज पर अधिकार करने के लिए क्यों युद्ध कर रहे थे ?

छत्तीसगढ़ में कल्चुरि वंश (हैह्यवंश) के राजा राज्य कर रहे थे। इनमें कलिंगराज, रत्नदेव, जाजल्लदेव आदि प्रमुख हैं। सन् 1000 ई. के आस–पास कलिंगराज ने समूचे दक्षिण कोसल पर अधिकार कर लिया। उसने तुम्माण नगर में अपनी राजधानी स्थापित की और लंबे समय तक स्वतंत्रतापूर्वक शासन किया। इसी वंश के रत्नदेव ने महाकोसल क्षेत्र में रतनपुर को राज्य की नई राजधानी बनाया। उन दिनों महाकोसल के क्षेत्र में रतनपुर की बराबरी का कोई शहर नहीं था।

कल्चुरि वंश के राजा अपने आपको 'राजपूत' कहते थे। इनके अतिरिक्त इस काल में भारत के दूसरे इलाकों में भी, विशेषकर उत्तर, उत्तर–पश्चिम व मध्य भारत में, कई राजपूत राजवंश प्रभावी हुए। इनमें से कुछ प्रमुख थे– चौहान, तोमर, परमार, गुर्जर, प्रतिहार, आदि। इन राजवंशों की विशेषता यह थी कि प्रत्येक वंश की कई शाखाएँ अलग–अलग जगहों पर राज्य करती थीं।

इस समय मध्य भारत में परमार वंश के राजाओं का शासन था। इस वंश के राजाओं में सबसे प्रसिद्ध था– राजा भोज। भोज ने सन् 1000 ई. से 1035 ई. तक शासन किया। अपनी शक्तिशाली सेना के कारण ही वह एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करने में सफल हुआ था। भोज एक पराक्रमी राजा होने के साथ–साथ विज्ञान, साहित्य और वास्तुकला में भी गहरी रुचि रखता था।

चित्र–1.2 रत्नदेव के शासन काल के सिक्के (12वीं सदी)

इसी समय मध्य एशिया का एक शक्तिशाली शासक हुआ जिसका नाम था महमूद गजनवी। उसने सन् 1000.ई. से 1025 तक बार–बार उत्तर–पश्चिम भारत के राज्यों पर आक्रमण किया और धन लूटकर अपने राज्य वापस चला गया। उसके राज्य में एक बड़ा विद्वान था, अलबरुनी। वह गणित, खगोल शास्त्र और अलग–अलग धर्मों का गहराई से अध्ययन करने भारत आया था। यहां आकर उसने संस्कृत भाषा सीखी और कई वर्षों तक जगह–जगह भ्रमण कर पुरानी पुस्तकों का अध्ययन किया। अपने देश लौटने के बाद उसने सन् 1030 ई. में अरबी भाषा में एक किताब लिखी जिसका नाम था 'तहकीक–ए–हिन्द'। इस किताब में उसने भारत के लोगों, उनके धर्म, रीति–रिवाज, विज्ञान, गणित और खगोल शास्त्र आदि के बारे में विस्तार से लिखा है।

1. मानचित्र 1.1– में देखें। परमार और कल्चुरि राजवंशों का शासन भारत के किन क्षेत्रों में था?
2. अलबरूनी से पहले भारत आकर अध्ययन करनेवाले एक विदेशी यात्री के बारे में आपने कक्षा 6 में पढ़ा था। उसका क्या नाम था और वह कहाँ से आया था?

राजवंशों की शासन नीति

इन अधिकारियों को राज्य की तरफ से नियमित वेतन नहीं मिलता था बल्कि बड़े भू–क्षेत्र या कई गाँव इनके नाम कर दिए जाते थे। इन क्षेत्रों से इनके लोग लगान आदि वसूल करते थे।

इस वक्त लगातार युद्धों के चलते रहने के कारण सेना का महत्व बढ़ गया था। राजाओं की सेना बहुत बड़ी नहीं होती थी। बड़े अधिकारियों और सामंतों के पास अपनी–अपनी सेनाएँ होती थीं जिन्हें वे जरूरत के वक्त राजा की मदद के लिए भेजते थे। सेना में पैदल सैनिकों के अलावा हाथी और घोड़ों का महत्व बढ़ गया था।

इस प्रकार की व्यवस्था का नुकसान भी था। आर्थिक रुप से स्वतंत्र होने और अलग सेना होने के कारण ये अधिकारी अक्सर अपने राजा की अवहेलना करते थे। वे हमेशा अपने लिए और ज्यादा स्वतंत्रता हासिल करने के लिए तत्पर रहते थे।

1. कक्षा 6 में आपने मौर्यों की शासन–व्यवस्था के बारे में पढ़ा था। उनकी शासन–व्यवस्था और इस समय की शासन–व्यवस्था में क्या अंतर है?
2. अधिकारियों को नियमित वेतन देने और भू–क्षेत्र उनके नाम कर देने में क्या अंतर है? दोनों के क्या फायदे और नुकसान हैं?

दक्षिण भारत के बड़े राजवंश

चोलवंश दक्षिण का सबसे शक्तिशाली राजवंश था। इस वंश के प्रमुख राजा थे– राजराज चोल, राजेंद्र चोल और कुलोत्तुंग चोल। इन राजाओं ने न केवल पूरे दक्षिण भारत पर अपना वर्चस्व स्थापित किया, बल्कि सैनिक अभियानों से धन इकट्ठा करने के लिए उड़ीसा और बंगाल तक के राजाओं को हराया और अपना विशाल राज्य स्थापित किया। उन्होंने अपने समुद्री बेड़ों की मदद से समुद्र पार कर श्रीलंका, इंडोनेशिया, मलेशिया, और मालदीव पर भी चढ़ाई की। श्रीलंका का एक बड़ा हिस्सा लंबे समय तक चोल राजवंशों का हिस्सा बना रहा।

चित्र–2.3
तंजावूर का वृहदीश्वर (राजराजेश्वर) मंदिर

चोल राजाओं की इन सैनिक सफलताओं का आधार था उनकी शक्तिशाली थल और जल सेना। सैनिक अभियानों से मिले धन से

चोल राजाओं ने कई भव्य मंदिर बनवाए। मंदिरों में स्थापित देवताओं के नाम उन मंदिरों को बनवाने वाले राजा के नाम पर होते थे, जैसे राजराज चोल ने राजराजेश्वर मंदिर बनवाया।

अपनी सेना जुटाने और शासन के अन्य खर्चों के लिए चोल शासक प्रजा पर विभिन्न प्रकार के कर लगाते थे। भूमि पर लगनेवाला कर इनमें सबसे महत्वपूर्ण था। यह कर उत्पादन के एक तिहाई हिस्से तक होता था। इसके अलावा व्यापार पर लगनेवाला कर भी काफी महत्वपूर्ण था। इसी के साथ बड़े निर्माण कार्य जैसे – तालाब, नहर आदि को बनाते समय गाँववालों से बेगारी की मांग भी की जाती थी। ग्राम व्यवस्था एवं स्थानीय स्वशासन का इस युग में विकास हुआ।

अभ्यास के प्रश्न

KXXADQ

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. सन् 1000 ई. के लगभग मध्य छत्तीसगढ़ में ..... वंश का राज्य था।
2. परमार वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक ..... था।
3. अलबरूनी ने अरबी भाषा में ..... नामक किताब लिखी।
4. ..... वंश दक्षिण भारत का सबसे शक्तिशाली राजवंश था।
5. प्रसिद्ध राजराजेश्वर मंदिर का निर्माण ..... ने कराया था।

2. निम्नलिखित में सही एवं गलत वाक्य बताइए–

1. हर्ष की मृत्यु के बाद भारत कई छोटे–छोटे राज्यों में बँट गया।
2. धर्म–ज्ञान और राजकाज चलाने के ज्ञाता के रूप में ब्राह्मणों की बड़ी प्रतिष्ठा थी।
3. महमूद गज़नवी पूरे उत्तर भारत पर शासन करता था।
4. चोल राजाओं ने कन्नौज पर भी अधिकार कर लिया था।

3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

1. अलबरूनी भारत क्यों आया था ?
2. चोल राजाओं ने समुद्र पारकर किन–किन देशों पर चढ़ाई की थी ?
3. कन्नौज पर अधिकार को लेकर किन–किन राजवंशों के बीच लंबे समय तक युद्ध हुआ ?
4. राजवंश ब्राह्मणों को अपने राज्य में बसाने के लिए दान में क्या देते थे ?
5. अपने राजवंश को ऊँचा और महान बताने के लिए ताकतवर राजवंशों ने क्या किया?
6. तहकीक–ए–हिंद नामक किताब में किन–किन चीजों का वर्णन मिलता है ?
7. भाट कौन थे और उनकी क्या भूमिका थी ?
8. महमूद गज़नवी और चोल राजाओं के सैनिक अभियानों में अन्तर बताइए ?

योग्यता विस्तार–

सन् 800 से 1000 तक उत्तर, पूर्वी और मध्यभारत के प्रमुख राजवंशों के राजाओं की सूची अपनी कॉपी में बनाइए।